# सूली पर समाज

एकता नाहर

हिन्द युग्म
hindyugm.com

**ISBN :** 978-93-84419-31-8

**प्रकाशक:**
हिन्द-युग्म
1, जिया सराय, हौज खास, नई दिल्ली-110016
मो.- 9873734046, 9968755908

**आवरण:** कवयित्री की संकल्पना से

**पहला संस्करण: 2015**

© एकता नाहर

Sooli Par Samaj by *Ekta Nahar*
(A collection of poems )

Published By
Hind Yugm
1, Jia Sarai, Hauz Khas, New Delhi -110016
Mob : 9873734046, 9968755908
Email: sampadak@hindyugm.com

Website: www.hindyugm.com

**First Edition : 2015**

इसी किताब की कविताओं की नायिकाओं को समर्पित

# एकता नाहर और उनकी रचनाएँ

एकता नाहर की तख़्लीक़ात (रचनाएँ) मेरे पास इस उम्मीद से आईं कि मैं उन पर अपनी हक़ीर राय पेश करूँ। यह बेटी उम्र के जिस दौर से गुज़र रही है उसमें तजुरबों, हादिसों, भावनाओं, पीड़ा और आक्रोश की पथरीली घाटियों के मंज़र जगह-जगह नज़र आते हैं। हालाँकि इंसानी समाज पूरी तरह से इन सबका शिकार नहीं हुआ। आज भी इंसानी क़दरें ज़िंदा हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि ये क़दरें कमज़ोरी और कम हिम्मती का शिकार हो गई हैं। ये क़दरें ज़ुल्म के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलंद तो करती हैं लेकिन उनमें वो पैनापन और काट दिखाई नहीं देते जिनकी सख़्त ज़रूरत है।

सृष्टि की रचना में क़ुदरत ने एक बेमिसाल संतुलन क़ायम किया है और इंसान से यह उम्मीद की गई है कि इस संतुलन में बिगाड़ पैदा करने का दुस्साहस न करे। सृष्टि के संतुलन के क़ानून का पालन ही इंसान की बिरादरी के लिए सर्वाधिक शुभ है। जब-जब इंसान ने इस क़ानून के ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है तब-तब उसे अनेकानेक प्रकोपों का सामना करना पड़ा है। ईश्वर ने पुरुष और नारी को एक-दूसरे का पूरक बनाया है लेकिन विडंबना ये है कि अपने पौरुष के बल पर पुरुष ने नारी को उसके कई ख़ास अधिकारों से वंचित किया और कहीं-कहीं पर जाकर यह सीमा बढ़कर दासता तक जा पहुँची। इतिहास गवाह है कि स्वाभिमानी नारियों ने संघर्ष भी किया, पुरुष प्रधान समाज में उनकी ललकार की गूँज भी सुनाई दी लेकिन उसका प्रतिफल सामने आता दिखाई नहीं दिया जितनी अपेक्षा थी। प्रकृति ने नारी वर्ग के लिए लक्ष्मण रेखा भी खींची है लेकिन इतिहास में चर्चित बहुत-सी महिलाओं ने उस रेखा को ख़ुद अपने ही हाथों से मिटाया भी है जिसका परिणाम ये रहा कि खरबूजे को देखकर दूसरे खरबूजों ने भी रंग बदला और क़ुदरती क़ानून सिसकियाँ लेकर रह गए। पुरुष की छत्र-छाया में नारी के उत्कर्ष की जो प्रक्रिया वर्णित है उसका अर्थ भी कहीं-कहीं ग़लत तरीक़े से पेश किया गया और ग़लत व्याख्याओं ने टकराव के रास्ते पैदा कर दिए। संतुलन बिगड़ा और फिर वो सब कुछ होने लगा जो समाज में कोढ़ पैदा करता है।

एकता नाहर की रचनाएँ ज़्यादातर आज की औरत की मज़लूमियत भरी दास्तानें सुनाती नज़र आती हैं जिनमें पीड़ा और कर्ब के प्याले छलकते दिखाई देते हैं। उनका कोमल हृदय इस पीड़ा से तिलमिलाता है। पीड़ादायक तत्वों के ख़िलाफ़ जंग के लिए खड़ी भी होती हैं लेकिन तत्वों के जनक शायद अपनी पूरी आकृति के साथ उनकी निगाहों के

सामने नहीं आ पाते। नतीजे के तौर पर वे उन लोगों पर भी संदेह करती हैं जो इसके लिए दोषी नहीं हैं या सब कुछ देखते सुनते हुए भी निष्क्रिय बने हुए हैं। ये कमज़ोरी सिर्फ़ एकता की नहीं है बल्कि वास्तविकता तो यह है कि जब हम एक इकाई के रूप में गुणों और दुर्गुणों की समीक्षा करते हैं तो एक सामूहिक समीक्षा की अपेक्षा उसमें कुछ कमियाँ रह ही जाती हैं। मेरी इस राय से मेरा तात्पर्य यह है कि पूरे साहित्यिक समाज से इसी तरह आक्रोश भरे स्वरों का समीक्षापूर्ण समर्थन अपेक्षित है। ऐसे प्रयोगों से आक्रोश में अनापेक्षित तत्व भी कम होंगे और एक संतुलित आंदोलन का आकार भी जन्म लेगा।

अपनी कविताओं के लिए शब्दों के चयन में एकता सतर्क हैं और शब्दों के साथ अपनी भावनाओं का तालमेल बनाए रखना एक अच्छे रचनाकार की निशानी है जो एकता नाहर में साफ़ दिखाई देती है। मेरी हार्दिक अभिलाषा है उनकी कविता के बाण सही जगह निशाने पर बैठना शुरू हो जाएँ और उनका साहित्य भटके हुए समाज में पुनर्जागरण की ज्योति जगाने में सफल हो। मेरी ढेर सारी शुभकामनाएँ और दुआएँ हमेशा उनके साथ हैं।

**मुनव्वर राना**

# मुझसे आप तक का सफ़र

हया की गिरफ़्त से आज़ाद होके
आजकल मैं लिख रही हूँ बेवाक होके

मेरा आप तक पहुँचना नियति या क़िस्मत की बात नहीं है, न ही यह बस एक किताब के लिखने से छपने तक का सफ़र था। यह सफ़र उन पूरे 25 सालों का है, जिनमें मैं सिर्फ़ कविताओं को अपने मन में जन्म देती रही और आप तक पहुँचने के लिए इन कविताओं ने न केवल संघर्ष किया बल्कि तपस्या की।

सच कहा जाय तो लेखक होने के लिए मैंने जितनी समाज से बग़ावत की, ख़ुद से भी उतना ही संघर्ष किया है, जब-जब समाज की कुरीतियों को अपने सामने देखा, मन में एक अजीब-सी टीस उठी, सिर्फ़ लिखना नहीं था, सच लिखना था, और सच लिखने का मतलब था समाज के एक बड़े हिस्से से संघर्ष।

दुनिया की बातें जितनी पथरीली होती गईं
क़लम मेरी उतनी ही और नुकीली होती गई

किन्हीं कारणों से जब एक औरत सूली पर लटकती है, तो उसके सूली तक पहुँचने के पीछे कहीं-न-कहीं समाज ज़िम्मेदार होता है और इसलिए हमेशा सूली पर चढ़ती किसी औरत के पीछे मुझे समाज सूली पर दिखाई दिया। हालाँकि सारा समाज इस बात के लिए दोषी नहीं है। लेकिन हम कब तक अपनी आँखों पर पट्टियाँ बाँधकर और मौन व्रत लेकर बैठे रहेंगे! इस किताब को मुक़ाम तक पहुँचाने के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जाने कितने ही लोगों ने मेरा साथ दिया, मैं उन सबके लिए हमेशा आभारी रहूँगी। अपने परिवार का, गुरुओं का और दोस्तों के लिए शुक्रिया कहना तो पर्याप्त नहीं है फिर भी उन्हें शुक्रिया जिनकी दुआओं से ही यह संभव हो सका। छोटे भाई-बहन शिवम और शिवानी ने मेरी हर कविता को स्नेह दिया हालाँकि शुरुआत में कई बार कविताओं में लिखे कुछ कटाक्ष शब्दों से भाई नाराज़गी भी ज़ाहिर करता रहा लेकिन वह कभी विरोध की स्थिति में नहीं आया, उसने हमेशा आगे बढ़ने का हौसला ही दिया, शिवानी को कई बार कविता न समझ में आने पर भी उसने तारीफ़ करना नहीं छोड़ा। मेरे कुलीग और सीनियर्स का भी शुक्रिया, जिन्होंने हमेशा मुझमें आगे बढ़ने की संभावनाएँ देखी, और मेरे क़द से ज़्यादा मुझे प्यार दिया। दतिया के मेरे सभी छोटे भाई-बहन जो मुझे अपनी दीदी जैसे सम्मान और स्नेह देते

हैं, और वे तमाम लोग जो वर्चुअल वर्ल्ड में मुझसे मिले और मेरे क़रीबी हो गए, उन्होंने मुझे हर क़दम पर सराहा और निरंतर प्रेरणा दी।

किताब के प्रकाशक हिंद युग्म का आभार। मुनव्वर राना जी का भी आभार जिन्होंने अपने अद्वितीय शब्दों में मेरी किताब की स्पष्ट भूमिका लिखी और अपना अनमोल आशीर्वाद दिया। इस किताब के पूरा होने के बाद बहुत मुश्किल था इसके लिए ऐसा कवर डिज़ाइन करना जो पाठक के दिल तक किताब की भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर सके।

और सबसे बड़ा शुक्रिया समाज के उन लोगों का जो तमाम चुनौतियों और तकलीफ़ों के बावजूद सच के लिए हर जोखिम उठाकर लड़ते हैं। वे सब जो हर क़दम पर मेरी प्रेरणा बनते रहे और एक हाथ जोड़कर प्यारा-सा शुक्रिया आपका जो आप इस किताब को अपने साथ लाए, उम्मीद है किताब के शब्द आपकी भावनाओं से पूरी तरह से जुड़ पाएँगे।

**एकता नाहर**
naharekta1@gmail.com

# कविता-क्रम

सूली पर समाज
बिकी हुई औरतें
लक्ष्मण रेखा
शारीरिक संबंध
पागल औरत
चुप्पी
मुक्ति
मौत का अलार्म
महबूब और मौसम
भेड़ चाल
दुविधा
काली रात का साफ़ा
प्रेम का संविधान
अनहोनी
अम्ल और क्षार
प्रेम का इतिहास
शैतान
प्रेम का हिस्सा
ज़रूरी बातें
दो तरह की स्त्री
प्रेम का अंजाम
भौतिकी का नियम

मेरी तपस्या का फल
साँप-सीढ़ी
मासूम-सा मन
मूक गधा
मुलाक़ात
हौसले के घुँघरू
नव सृजन
स्मृति की गर्मी
ग़लतफ़हमी
ज़िंदगी
रंगों की मिलावट
बादल से बात
काश!
अंतरा बेबी
मैली पीठ
हादसा
प्रेम का दाँव
पुरानी चीज़ें
चक्रवात
झुर्रियों के निशान
अमृता और इमरोज़
सबसे बड़ा सुख
मेरी तस्वीर
नीम का पेड़
विद्रोही गीत
आईना
सोलह सोमवार का व्रत
खास चीज़ें
अपशकुन

हमारी मोहब्बत
अधूरी-सी शाम
नारंगी होंठ
मृत्यु
संदूक
भीख
चॉइस
इंतज़ार
प्राथमिकताएँ
आवाज़ के अवशेष
विस्फोट
वारिस
नीला ज़हर
आदमी का प्रेम
गुनाह
छलावा
संतुष्टि
बहेलिया
संस्कार
ज़ख्म
भरोसा
ईसा मसीह
पहली मौत
द लास्ट लीफ़
समीकरण
माचिस की तीली
सम्मोहन
महबूब का वादा
लम्हे

उदासी की लकीर
पाप और भय
मेरी उम्र की लड़कियाँ
करवाचौथ का व्रत
खराब लोग
सहेजी हुई बातें
निर्वात
देह की कामना
छली हुई औरतें

## सूली पर समाज

**(1)**

वे सब लड़कियाँ जिन्हें रोंदा गया है कुल्हाड़ी से
जिन्हें चिनवाया गया है दीवारों में
जिन्हें लटकाया गया है सूली पर
जिन्हें कहा गया है चरित्रहीन
मैं सहलाती हूँ उनके छाती के दर्द को
उनकी पीठ पर जो हैं कोड़ों के निशान
मैं दूर तक उनके पीछे भागकर उन पर मलती हूँ बर्फ़
उनके अंदर पल रहा है चुप्पी का गर्भ
मैं उनके पेट पर मारती हूँ एक ज़ोर की लात
ताकि वे सब मरी हुई लड़कियाँ
ज़िंदा हो सकें मेरी कविताओं में
और पूरी दम से चीख सकें/चिंघाड़ सकें
कई दफ़ा धम्म की आवाज़ के साथ
वे पटक दी जाती हैं ज़मीन पर
मैं फिर उठाती हूँ उन्हें उनके लहूलुहान पैरों से
उनके दर्द पे पट्टियाँ बाँधना मेरी ज़िम्मेदारी है
जिस रोज़ तुम लोगों ने
उन्हें चिनवाया था/लटकाया था/रोंदा था
उस रोज़ सूली पर तुम सब भी लटके थे उनके साथ
वे कमज़ोर थीं तो मर गईं
तुम बचे हुए हो तिल-तिल कर मरने के लिए।

**(2)**

मुझे मालूम है मेरे सच कहने का हश्र
एक स्टूल पर खड़ी मैं
और पंखे से झूलता एक फंदा
पर ओ मेरे प्यारे समाज,
इधर मैं मेरी कविताओं में बनाती हूँ
हर रोज़ नयी हथकड़ियाँ
जिनसे बँधे हुए हो तुम सब लोग
हर रोज़ नए फंदे
जिनसे टँगे हुए हो तुम सब लोग
मैंने अब तक नहीं सरकने दिया
किसी के भी स्टूल को
जिस दिन तुम मुझे लटकाने आओगे
तुम्हें सरकाने होंगे अपने स्टूल भी।

**(3)**

मैं एक ऐसे समाज में पैदा हुई
जहाँ फाँसी के फंदे कम थे
और अपराधी ज़्यादा
या तो मुझे उम्र भर सबके लिए
फंदे बनाना था
या माफ़ कर देना था सबके अपराध।

# बिकी हुई औरतें

उनके होंठों पर इतनी गहरी लाली थी
कि अपनी ही पीड़ा का लहू पिया हो उन्होंने
वे काट लेती थीं अपनी उँगलियों के नाख़ून
कि बिकी हुई औरतें विद्रोह नहीं करतीं
वे न बहकी हुई थीं, न वे संघर्ष करती हुई
उनका क़सूर इतना था कि वे अब बच्ची नहीं रहीं
एक रात मौक़ा देखकर उनकी याचनाएँ
उस रेड लाइट एरिया से भाग गई थीं
उसके बाद उन औरतों की आँखों में कोई बादल नहीं फूटा
और वे औरतें जिनके दर्द से कड़कती थी बिजलियाँ
उनमें भी आ गया लंबे समय के बाद ठहराव
उनके इर्द-गिर्द सब करते गिनतियों का शोर
सब तो बेचा जाता है, यहाँ कोयले से लेकर हीरा तक
कटे हुए बाल, मरी हुई मुर्ग़ी और सूअर का गोश्त तक
तो वे लोग क्यों शर्मिंदा हों जो औरतें बेचते हैं?

# लक्ष्मण रेखा

सीता के ‘न’ कहने पर
रावण ने तो नहीं किया एसिड अटैक
तो मेरे जिस्म पर ये घाव क्यों उभारे गए
मेरी छाती क्यों किसी रसायन ने समतल कर दी
ज़हर की गोलियाँ और बंदूक की गोलियाँ
करती हैं बराबर असर
फिर क्यों रसायन की बूँदों में क्षमता है
आत्मा को जला डालने की

कौन-सा ईश्वर तय करता है
कि किसके हिस्से में आनी चाहिए
कितनी सहनशक्ति
कि उसने मुझे चुना है
उम्र भर के इस दर्द के लिए

मेरी योनि में जब डाले गए शीशे के टुकड़े
बचे हुए टुकड़े ईश्वर ने सबकी आँखों में डाल दिए
ताकि मेरे अलावा कोई नहीं देख पाए मेरा दर्द
जब मेरे चेहरे/मेरी छाती पर फेंका गया एसिड
ईश्वर ने उसी एसिड से जला दिए सबके गले
ताकि मेरे अलावा
किसी के कंठ में नहीं रिस पाए रुदन

मैं अपने नन्हे पैरों से भागती कितना दूर तक
मेरे पैरों को तो सिर्फ़
कोमल और सुंदर जूते पहनने की आदत थी
मैं अपनी छोटी हथेलियों से क्या-क्या ढँकती
अपना चेहरा, अपनी छाती या अपनी आत्मा
मेरी हथेलियों को तो सिर्फ़
मुट्ठी में
चिड़िया का गुलाबी पंख छिपाने की आदत थी

वो जो सीता का ईश्वर है
क्या वो सीता के साथ ही धरती में समा गया
मैं तो छली गई हूँ मेरे ही ईश्वर से

सीता का तो फिर भी गुनाह था
लक्ष्मण रेखा पार करने का।

# शारीरिक संबंध

मेरे पास आड़े-तिरछे अधकचरा शब्द हैं
कविता मेरी भाषा है उन्हें पिरोकर हार बनाने की
मेरे पास सर्द हवाओं की ठंड से काँपते विचार हैं
कविता के पास कंबल हैं उन्हें गर्माहट देने को
फिर भी उसे नहीं पसंद मेरा कविताएँ लिखना

वर्षों मैंने सही है अथाह पीड़ा
कविता ही मेरे दुःख-दर्द का सबसे सटीक आवरण है
पर उसे नहीं पसंद उसके सिवा मुझे कोई प्रिय होना

उसे लगता है कि मैं इस तरह यक़ीनन
भूल जाऊँगी प्रेम की बारीकियाँ
और उसके प्यार के रस को छोड़कर पीने लगूँगी
कविताओं को प्याले में भरकर

पर वह नहीं समझ पाता कि जब मैं
सीढ़ियों पर खड़े होकर पुकार रही होती हूँ उसका नाम
तब मैं कह रही होती हूँ अपनी सबसे सुंदर कविता
जब मैं अर्धरात्रि को उसके होंठों को चूम रही होती हूँ
तब मैं लिख रही होती हूँ अपनी सबसे लंबी कविता

और उसके ही इर्द-गिर्द मँड़राती रहती हैं
मेरी प्रेम, विरह, मुक्ति, दर्शन की सभी कविताएँ

इस तरह असल में कविता और वो पूरक हैं
पर उसे नहीं सहन किसी के साथ मिलकर पूरा होना

मैं एक शताब्दी से बना रही हूँ
इन कविताओं के साथ शारीरिक संबंध
और अपने सब वस्त्र उतारकर
हज़ारों बार इनके सामने मैं हुई हूँ नग्न
इन्होंने देखा है मेरा रोम-रोम निर्वस्त्र
इसलिए यही बाहर ला पाती हैं
मेरे कंठ में फँसे शब्दों को
पर उसे कैसे बर्दाश्त हो
उसके सिवा मेरा किसी और से शारीरिक संबंध होना!

# पागल औरत

एक पागल औरत फेंकती थी पत्थर
कभी-कभी सड़कों पे पड़ी चीज़ें
और नाली का कचरा भी
रोती-बिलखती पीटती थी अपनी छाती
सड़कों पर सरपट दौड़ती थी इधर-से-उधर
पागल कुत्तों की तरह करती थी सबका पीछा

उस औरत के पास से आती थी दुर्गंध
धूल सनी रहती, कभी चाट लेती थी धूल को ही
किसी ने कहा वह बच्चा नहीं जन सकती
किसी ने कहा
पूर्व जन्मों के कुकर्मों का फल है
और किसी ने कहा
उसे बीच सड़क पर मार देनी चाहिए गोली

मोहल्ले के बच्चे उसे मारते थे पत्थर
और ताली बजाकर चिल्लाते थे पागल-पागल
यह उनके लिए एक अलग ही तरह का खेल होता था
कुछ को तो शायद अपने क्रिकेट से भी प्रिय हो चला था
उसे चिमटी काट के भाग जाना

सब औरतें कर लेती थीं अपने घर का दरवाज़ा बंद
फिर भी ताक लेते थे मर्द उसके फटे वस्त्रों में से

उसके बिना उभरे हुए बदन को
और कभी-कभी लाज को गठरी में बाँधकर वह
ख़ुद ही उछलने लगती थी पूरी तरह से निर्वस्त्र होकर
मैंने उसे पास जाकर देखा था
सूजने पे आई थीं उसकी आँखें
उसे छुआ तो कुछ न बचा था
उसके बदन में सिवाय हड्डियों के
उसे फ़र्क़ नहीं था कूड़ा-करकट
और रोटी-भाजी का
एक नए दुपट्टे को
उसने मेरे सामने ही दाँतों से चीथा था

मालूम हुआ कि वह हमेशा से नहीं है ऐसी
एक रात भरे सन्नाटे में उसका बलात्कार हुआ था।

# चुप्पी

मैंने जब भी कोशिश की चीखने की
मेरे सिर पर तान दी गईं बंदूकें
चुप्पी मरती है सबसे आसान मौत

एक छोटी-सी बच्ची को उभरा एक अजीब रोग
पर वह नहीं कह सकती थी कि उसे कैसा दर्द है
गुब्बारे और चॉकलेट देकर रिझाया गया था उसे
उसकी समतल छाती में भी ढूँढ़ लिए गए थे उभार
वह अपनी नन्ही-नन्ही हथेलिओं से पोंछती अपने आँसू
सिसकियाँ लेती कहती माँ से माँ वो अंकल....
माँ बाँध देती है उसके मुँह पर
चुप्पी की एक काली पट्टी
उसकी फ्रॉक पर उसको ओढ़ा देती है दुपट्टा

शहर मरा जाता है शोर में, माँ घुटी जाती है कमरे में
चुप्पी पिए जाती है अमरत्व का लहू
दुपट्टे छिपाते हैं ज़ख़्मी हो चुकी छातियाँ
शर्ट की कॉलर छिपाती है गले में आई पसीने की बूँदें
सड़कों पर कारों की रोशनी रुक-रुक कर ढूँढ़ती है
गुब्बारों से रिझाया जाने वाला कोई और बचपन।

# मुक्ति

तुम आओ कहीं से
कि सबसे ख़राब मौसम में भी खिलते हैं कुछ फूल

आख़िरी सीढ़ी तक मेरे उतरने से पहले ही
उतर जाता है मेरा साया
तब भी मैं खड़ी होती हूँ
तुम्हारी उम्मीद में ही सीढ़ी पर

देखो बस एक तुम्हारा नाम
न लिख पाने के हुक़्म के अधीन
मेरी कल्पना में जन्म लेने लगते हैं
प्रकृति के सबसे विस्मयकारी रहस्य
तुम कहो तो तुम्हारा नाम बस लिख लूँ
तो फिर ऐसे कोई ख़्याल न आएँ

मेरी चीख चीरती जाती है उल्काओं को
तुम्हारी स्केल नहीं नाप सकेगी
मेरे इंतज़ार के विस्तार को
कभी अहिल्या बनकर करती हूँ
तुम्हारे छूने का इंतज़ार
कभी छोटे क़दमों से चलती जाती हूँ
सूखे पत्तों और काँटों के बीच
और हर दिशा से तुम्हें पुकारती हूँ

कि अब तुम आ भी जाओ कहीं से
और मुझे मुक्त करो इन काल्पनिक पहाड़ों के गर्भ से
तड़पती रूह की मुक्त करना तांत्रिक का धर्म है।

# मौत का अलार्म

मेरे भीतर कुछ रिसता है
ये मेरे अनकहे शब्दों का लहू है
मैं वही सोलह रंगों की चिड़िया हूँ
जिसके पंख टूटने पर
तुम अपनी किताब में रख लेते हो
सुंदर चीज़ें टूटने पर भी सहेज ली जाती हैं
प्रेम में बहुत कुछ टूटता है सिवा आस के
उम्मीदों के पास है रिसायकिल होने की कला
श्रेष्ठ कविताएँ नहीं ओढ़तीं
सर्द रातों में भी बेईमानी का कंबल
वे सत्य की बर्फ़ से ढँकती हैं अपना तन
कच्ची नींद की तरह ज़िंदगी टूटती है बार-बार
मौत का भय एक सताने वाला अलार्म है।

## महबूब और मौसम

जिस तरह हम नहीं रख सकते
इस मौसम की सर्द हवाएँ बचाकर
आने वाली गर्मियों के लिए

उसी तरह नहीं रखा जा सकता
महबूब का कोई भी वादा संभालकर
आने वाले सालों के लिए

देखते हैं अगले महीने मौसम की क्या नियति है।

# भेड़ चाल

कौन है जो बढ़ता जाता है
मेरी आज़ादी के पुल पर धड़धड़ाते हुए
कौन है जिसके अहंकार की मुट्ठी से
कभी नहीं फिसलता मेरा वजूद
कौन है जिसके लिए
मैं मात्र जीवित वस्तु की संज्ञा हूँ

मैं वर्षों से तलाश रही हूँ कि क्या कहा जाय मुझे
जलपरियाँ हँसती हैं मुझ पर कि वे नहीं हैं
फिर भी उनके पास है अपना स्वतंत्र वजूद

मैं इस आधी रात के हर स्वप्न को
करती हूँ सिरे से ख़ारिज
कि मुझे नहीं पसंद स्वप्न जैसी
किसी मिथ्यामय चीज़ का होना
प्रेम को भी किया जा सकता
काश ज़िंदगी से ख़ारिज!

नयी चप्पलों का रंग नहीं
पुरानी टूटी चप्पलों के रंग जितना सुंदर
इस तरह न जाने मैंने कितनी ही
अतीत की टूटी चप्पलें सहेजकर रखी हैं
सबसे सरल होता है

# जीवन में बेरंग अतीत को सहेजना

तुम कहो तो मैं टाँग दूँ
किसी सलीब पर अपने शरीर को
या लटका दूँ
अपनी देह के सौ टुकड़े करके आसमान में
तब बुदबुदाओगे क्या तुम मेरा नाम
आयतों के उच्चारण की तरह

वो चिड़ियाघर का सफ़ेद-नारंगी राजहंस
क्यों है क़ैद में
क्या तुमने नहीं देखी
संसार में उससे सुंदर कोई भी चीज़
या वह भुगत रहा है
अपनी प्रजाति के विलुप्त होने की सज़ा

इससे पहले कि
मुझे भी डाल दिया जाए किसी तहख़ाने में
संभव है कि इतिहास में
घोषित कर दिया जाए मुझे विलुप्त
मैं शामिल होकर चलती हूँ
तुम्हारी भेड़ चाल में
कि भेड़ें अब भी बची हुई हैं
विलुप्त होने के ख़तरे से।

# दुविधा

काली बिल्ली के रास्ता काटने पर अशुभ होना
दुर्भाग्य से बचने के लिए देवताओं की मूर्ति पूजना
और कुछ लड़कियों को मनहूस समझा जाना
लोग रहते हैं दुविधा में
कि इन बातों पे यक़ीन किया जाय या नहीं

जिस तरह लाल स्याही से कोई लिख देता है नीला
फिर पूछता है कि बताओ कौन-सा रंग है
और उत्तर में नीला होना भी
उतना ही ठीक लगता है जितना कि लाल।

# काली रात का साफ़ा

तुम जब जाओ तो छोड़कर जाना

काली रात का साफ़ा मेरे सिर पर
सड़कों का ख़ालीपन मेरे बिस्तर पर
तपते सूरज की जलन मेरी आँखों में
अपनी सिगरेट का धुआँ मेरी साँसों में

मेरे दिल को कील बनाकर ठोंकना
मेरे ही कमरे की सामने की दीवार पर
और उस पर टाँग जाना
तुम्हारे न आने की सभी तारीख़ों वाला कैलेंडर
तुम छोड़कर जाना बुख़ार में तपता मेरा शरीर
और दवाई की शीशियों में भर देना ज़हर
मेरे घर के दरवाज़े से मिटाना मेरा नाम
और लिखना वहाँ मायूसी और मौत

तुम्हें क़सम है मेरे महबूब
मुझे छोड़कर जाना तो बस इसी तरह जाना।

# प्रेम का संविधान

चलो कि प्रेम का नया संविधान लिखते हैं

अबकि बार प्रेम में कुछ ऐसी सज़ा हो कि
पैरों तले मसल दी जाये हथेली
नोंच दिए जाएँ गाल, आँखें और बाल
मुट्ठी में फँसा के भींच दी जाए गर्दन
नाख़ूनों से खुरच दी जाए खाल
काट दिया जाए कमर को खंज़र से

आजकल हर किसी के मुँह से सुनती हूँ
कि दिल टूटने से बड़ी सज़ा कोई और नहीं।

# अनहोनी

रात के बालों में कंघी फिराता
मेरे दिल में मचलता याद का एक टुकड़ा
अचानक ख़ुद ही उलझ जाता है

रात हँसना चाहती है मुझ पर
ठहाके लगाकर/मुँह चिढ़ाकर
पर रहती है एकदम सुन्न/मौन/निस्तब्ध

रात को डर है किसी अनहोनी के होने का।

# अम्ल और क्षार

जीवन अम्ल और तुम्हारा साथ क्षार
इस रासायनिक क्रिया में घुलकर
उदासीन होते रहे उम्र के साल
और नमक की तरह पैदा होती रहीं तकलीफ़ें

मैंने ढूँढ़ लिया है ख़ुशी के पानी से भरा एक हौज़
जिसमें मैं घोल रही हूँ सारा नमक
और फिर बहा दूँगी इस नमकीन पानी को
दूर किसी खारे समंदर में

अब मैं छोड़ना चाहती हूँ अम्ल होने की प्रवृत्ति
ताकि फिर कोई क्षार न कर सके जीवन को उदासीन।

# प्रेम का इतिहास

हड़प्पा की सभ्यता की तरह
कभी किसी खुदाई में निकलेगा
शायद प्रेम का भी एक इतिहास
कि कब उत्पत्ति हुई प्रेम की
और कैसे गुज़ारता था आदम
एक पूरी उम्र बिना प्रेम के

बर्बादी के क़िस्से लिखने वाला ये दुखदायी प्रेम
कभी तो रहा होगा मिट्टी की परतों के नीचे दफ़न।

# शैतान

ऐ लड़की सुन तू ख़ुद ही उठ जा नींद से
कोई सुंदर राजकुमार आकर नहीं जगाने वाला
तेरे निचले होंठ को अपने होंठों से चूमकर

तू किसी प्रिंस चार्मिंग के महल में
अपना काँच का जूता छोड़ के मत आना
कोई प्रिंस नहीं आने वाला
तेरा जूता लेकर तुझे ढूँढ़ने

ऐ लड़की सुन तुझे मालूम है न कि
असल में नहीं होता नायक
किसी परिकथा के नायक जैसा
लेकिन होते हैं दुष्ट, शैतान और पिशाच
मायावी ताक़तें और जहरीले दाँत लिए
वही जिन्हें तुमने अपने सपने में देखा है
अपने प्रेमी की तलवार की नोंक के नीचे
और तुम ताली बजा-बजाकर उछल रही थी
कि अब तुम आज़ाद हो
अपने राजकुमार के कानों में फुसफुसाकर
उसकी गर्दन पर चूमने के लिए

पर लड़की सुन प्रेम एक तरह का छलावा है
वही बातें सच होती हैं

जिन्हें हम दरकिनार रख देते हैं
मालूम तो है तुम्हें कि
जो नहीं दिखाई देता, वही वास्तविक है
और परदे के पीछे का असल सच नायक नहीं शैतान है।

# प्रेम का हिस्सा

मैं प्रेम के हिस्से में लिखती हूँ अपनी उम्र
और देखती हूँ कि मेरे हिस्से में
आती हैं तमाम तकलीफ़ें

मैं मिटाती हूँ उम्र को और
उसकी जगह लिखती हूँ कुछ साल
और तब मेरे हिस्से में आते हो तुम।

## ज़रूरी बातें

प्रेम के हर रास्ते पे खड़ी होती हैं काली बिल्लियाँ
आदमी उलझकर सोचता रहता है
काश! कोई बताए कि क्या है शुभ-अशुभ
इस तरह प्रेम में आदमी कभी नहीं हो पाता बेपरवाह

मैंने सोचा कि मैं हो जाऊँ एक काला कौआ
कौओं को शायद माफ़ होता है झूठ कहना
इस तरह मैंने सच से बचने के लिए
काला कौआ होना भी स्वीकार कर लिया

हरदम खुले बाल रखने वाली लड़की भी
एक दिन बाँध लेती है कसकर जूड़ा
मुश्किलें इंसान को क्या कुछ नहीं सिखा देतीं

हर घर में एक दराज़ ख़तों के लिए होता है
जिसमें रखे होते हैं वैलेंटाइन और फ्रेंडशिप डे वाले कार्ड
कार्ड जैसी बचकानी चीज़ें बची रह जाती हैं
प्रेम जैसी ज़रूरी चीज़ों के ख़त्म होने के बाद।

# दो तरह की स्त्री

सारी चेष्टाएँ निष्फल हैं
प्रेम में विक्षिप्त और अहंकारी
दोनों ही तरह की स्त्री को परास्त करने की

सब कुछ नाशवान है
फिर भी नहीं तजा जाता प्रेम और अहंकार।

# प्रेम का अंजाम

मैंने रख दी है छत पर स्टील की एक कटोरी
सुना है कि आज चाँद से अमृत बरसने वाला है

वैसे मुझे मालूम है कि ये कोरी अफवाह है
पर अमृत पाने की चाह में कल्पनाओं के कुछ कीड़े
रेंगने लगे हैं मेरी बुद्धि की जमीन पर

प्रेम के अंजाम के बारे में भी तो मुझे पहले से मालूम था।

# भौतिकी का नियम

जितना तुमने उसे प्रेम किया
अब उससे उतनी ही नफ़रत कर डालो
इसी तरह भूल पाओगी तुम उसे
और फिर एक दिन सब शांत हो जायेगा
उसके लिए तुम्हारा दुःख, ग़ुस्सा, तुम्हारी चाहत

भौतिकी का यही नियम है
जितना पॉजिटिव फ़ोर्स उतना ही नेगेटिव
और दोनों मिलकर आपस में हो जाते हैं कैंसिल।

# मेरी तपस्या का फल

इस सृष्टि में जितने बीज मैंने बोए हैं अपनी कविता के
एक दिन वे सब पेड़ बनकर मीठे फल देंगे
कविता नयी सदी के निखार का सबसे बेहतर बीज है

तुम कभी इतना फ़िक्रमंद न होना कि
कि ज़िंदगी चल ही न पाए बिना वज़ीर के
सब बिछड़ जाना है एक दिन गहरी नींद के साथ

तुम चाहो तो हो जाना जादूगर
और सबके साथ खेलना सम्मोहन वाले खेल
पर क्या तुम सीख पाओगे कोई ऐसी कला भी
कि चौंककर बना सको ख़ुद को ही मूर्ख
ख़ुद ही लड़की को बीच में से काट देने वाले खेल पर
ख़ुद को छल पाना दुनिया का सबसे असंभव काम है

गंगा की निर्मलता मेरी आत्मा है
कारख़ाने मेरी आत्मा पे उगे फफोले हैं
पलायन करते शहर मेरी चिंता हैं
पृथ्वी पे फैली ऑक्सीजन मेरी तपस्या का फल है

क्या किसी ने ख़ुद को बेरंग करके
भरे होंगे तितलियों में रंग
या उसके पास होगी रंगों की एक विशाल ट्रे

तितलिओं के रंग मेरी जिज्ञासा हैं

छोटे पहाड़ पर चढ़ना मेरी कोशिश है
उससे आई नयी उम्मीद मेरी कोशिश का इनाम है
हमारी आत्माओं की रगड़ से
गिरता हुआ मैल बुरी कामनाओं का नाश है

अमृत से बड़ी चीज़ कुछ नहीं
फिर भी समुद्र मंथन से अमृत निकल जाने के बाद
हमने नहीं छोड़ा समुद्र में नयी-नयी खोजें करना
इसी तरह प्रेम में होने वाले लोग नहीं छोड़ पाते
अपने महबूब को, कुछ न बचे रहने के बाद भी।

# साँप-सीढ़ी

हम नहीं खेलना चाहते
प्रेम वाली साँप-सीढ़ी का ऐसा खेल
जहाँ जीत से एक घर पहले
हमें काट ले धोखे का मोटा साँप
और हम आ जाएँ वापिस वहीं
जहाँ से करते हैं शुरूआत

हम हमेशा रहते हैं सीढ़ी की चाह में
कि कुछ ही चालों में हम जीत सकें खेल

लेकिन कोई पाँसा नहीं पलटता हमारे इशारों से
हम हमेशा डरते रहते हैं उस लाल मोटे साँप से
और जब बहुत देर तक नहीं मिलती कोई सीढ़ी
हम उकताकर बीच में ही छोड़ देते हैं खेल।

## मासूम-सा मन

मैं बादल के एक कतरे-सी
पागल-पागल फिरती हुई
कभी धूप से जलती हुई
कभी मुसाफ़िर-सी भटकती हुई

पिया मिलन की आस में
कभी छम-छम बरसती हुई
कभी इंद्रधनुष की चूनर ओढ़े
रंगों से सँवरती हुई

कभी शाम में डूबती एक उदासी-सी
बालकनी में सिसकती हुई
कभी चिड़िया की आँख की तरह
अर्जुन के तीर से बचती हुई

कभी वक़्त की शाख़ पे बैठी
उसके तसव्वुर से चहकती हुई
कभी अकेली उदास रातों में
दिन भर की जली बुझती हुई

कभी अर्धरात्रि के पहरों में
चंद्रमा को तकती हुई
नन्ही-नन्ही आशाएँ मेरी

‘मासूम’ से मन में मचलती हुई

सुबह की हथेलियों से अपनी
नींदों को आँखों में मलती हुई
कभी चाँद को छिपाती अपने आँचल में
कभी चाँदनी में छिपती हुई

मैं बादल के एक कतरे-सी
महबूब को देख उमड़ती हुई
जीवन के अर्थ खोजते
ख़ाली रातों में तनहा फिरती हुई।

## मूक गधा

कई बार रिश्ता बोझ बन जाता है
और ज़रूरी हो जाता है उस वक़्त
कंधे हल्के कर लेना
पर बेअक्ल दिल किसी अच्छे गधे की तरह
ढोता रहता है हर वज़न बिना किसी शिकायत के
होना ये चाहिए कि सामान के भारी हो जाने पर
दिल को भी आना चाहिए ज़ोर-ज़ोर से रेंकना
और बोझा न हटाए जाने पर उसे पटक देना
पर प्रेम में दिल हो जाता है कोई मूक गधा
महबूब अगर बन भी जाए निर्दयी मालिक
तो भी गधा खड़ा रहता है
सिर झुकाए और बिना पूँछ भी हिलाए उसके सामने।

# मुलाक़ात

**(1)**

तुम कभी आओ तो वहाँ झाँकना
जहाँ मेरे मन का
तेज़ वेग से बहता हुआ झरना ठहरता है
उतना ही शांत होकर
जितना आख़िरी चीख के बाद हुआ सन्नाटा
अक्सर मैं वहीं छिपकर बैठी हुई होती हूँ
एकदम निःशब्द/निष्क्रिय/निस्तब्ध/नीरव
अपने ही मचाए शोर से हारकर
तुम आओ तो चुपचाप वहीं चले आना
हालाँकि अफ़वाहें नहीं पहुँचने देंगी तुम्हें वहाँ तक
पर फिर भी तुम दबे पाँव आ जाना कि तुम देखोगे
भूकंप मचाने वाली पृथ्वी का खोखला कोर।

**(2)**

तुम कभी आओ तो वहाँ झाँकना
जहाँ मेरे मन की
सबसे कमज़ोर दीवार खड़ी है
उतनी ही सहमकर जैसे
कोई 'मासूम' बचपन गुज़रता है किसी दर्दनाक हादसे से
अक्सर मैं वहीं छिपकर रो रही होती हूँ
एकदम खुलकर/टूटकर/चीखकर/दहाड़कर
अपनी ख़ामोशी और चुप्पी को तोड़कर
तुम आओ तो चुपचाप वहीं चले आना

हालाँकि, मेरा सामर्थ्य नहीं पहुँचने देगा
तुम्हें मेरी कमज़ोरी तक
पर फिर भी तुम दबे पाँव आ जाना कि तुम देखोगे
अतिशक्तिशाली पर्वत की सहमी हुई छाती।

**(3)**

तुम कभी आओ तो वहाँ झाँकना
जहाँ मैंने छिपा रखा है
अपना सोलहवाँ साल
उतना ही रूमानी जितनी कि क़ुदरत की सबसे हसीं शै'
अक्सर मैं वहीं चूम रही होती हूँ तुम्हें
एकदम निस्वार्थ/प्रेममय/बेफ़िक्र/बेपरवाह
ज़माने को पैर के अँगूठे की नोंक पर रखकर
तुम आओ तो चुपचाप वहीं चले आना
हालाँकि, मेरी उम्र के ये साल
कभी नहीं लौटने देंगे तुम्हें वहाँ तक
पर फिर भी तुम दबे पाँव आ जाना कि तुम देखोगे
एक साल में गुज़रती प्रेम की एक पूरी उम्र।

# हौसले के घुँघरू

अपने सपनों को कमरबंद बनाकर बाँधना
और फिर हौसलों के घुँघरुओं के साथ
बावला होकर नाचना तब तक
कि घुँघरुओं के शोर से थरथरा उठे पृथ्वी
जैसे कि तुम्हारी आत्मा पे
कितने ही जन्मों से पड़ रहे हों कोड़े
इस नृत्य न कर पाने की पीड़ा में

क्योंकि किसी नाद की सुरीली झंकार पे
थिरकते भर रहने से नहीं गरजता
कोई सपनों से भरा आकाश।

# नव सृजन

मैंने कहा कि सफ़ेद रंग शांति का प्रतीक है
इसलिए उसने अपने घर की दीवारों को कभी नहीं रंगा
पर उसके मन के काले उजाड़ में
कभी नहीं खिल सके सफ़ेद फूल
शरीर के अंदर जो है लाल रंग का दिल
उसे दरअसल होना चाहिए था सफ़ेद रंग का
कि प्रेम से पहले मनुष्य को शांति की ज़रूरत है

इससे पहले कि एक समूह कर दे दूसरे समूह का नाश
धरती चाहती है मनुष्य की मित्र होना
और सड़ चुके शहरों को ऐसे महाद्वीप में तब्दील करना
जहाँ सभी मनुष्य करते हों एक ही तरह की भाषा में बात
पर धरती खो चुकी है नव सृजन की कला

फिर भी शांति की मूक ध्वनि गूँजती रहती है
विरोध करती है विनाश के जयकारों का
जब तक ख़ून की आख़िरी बूँद भी फूँकती है उसमें प्राण
और आख़िरी उँगली का नाख़ून भी गलकर
अलग न हुआ हो शरीर से।

## स्मृति की गर्मी

तुमने जिस-जिस कण में इश्क़ फूँका था
मैंने नहीं पसरने दिया किसी को भी धूल में

तुम आओ तो मैं मन्नतों के धागों का मोह छोड़ूँ
और आकर बैठूँ तुम्हारे क़दमों में
तुम्हारी एड़ियों को चूमती हुई

आओ और उघाड़ दो ये इंतज़ार का चोगा
मेरा ये बदन पूरी तरह से
तुम्हारी स्मृति की गर्मी में नहा चुका है।

# ग़लतफ़हमी

मैं एक चौदह माले की ईमारत में
तीसरी मंज़िल पर रहती हूँ
मेरा सात साल का भतीजा अक्षत ज़िद करता है मुझसे
आसमान को हाथ बढ़ाकर छूने की
उसे लगता है कि चौदहवें माले पर जाने से
आसमान और क़रीब हो जाएगा
दरअसल, ये उसकी ग़लतफ़हमी है
असल में कुछ चीज़ों की दूरी नहीं सिमटती
बहुत पास या एकदम पास जाकर भी

तुम्हारे प्रेम में पड़ते वक़्त मुझे भी तो ऐसी ग़लतफहमी थी।

# ज़िंदगी

बंजर जंगल, बेपरवाह लड़के
हारता मुसाफ़िर, नाउम्मीद निगाहें
आख़िरी प्याले के बाद बची हुई तड़प
समंदर से गहरे ख़ाली उदास मन
अनकहे दर्द को जीती मासूम लड़कियाँ
शाख़ों पे झूलती पत्तों की ख़ामोशी
विष का प्याला पीते जाने कितने सुकरात

ज़िंदगी कुछ अलग है प्रेम की कविताओं से।

# रंगों की मिलावट

अवसाद के रंग नहीं होते
प्रेम के रंग जितने गहरे
वे छूट जाया करते हैं
प्रेमी की उँगलियों की हल्की-सी छुअन से

लेकिन असल में हम होते हैं शैतान बच्चे
भरे हुए होते हैं रंगों के लालच से
और जब आसपास कोई नहीं देख रहा होता
तो हम लगा लेते हैं
अपने रंगे हुए हाथ अपने ही गालों पर

क्योंकि हमने ख़रीदे होते हैं
सबसे सुंदर और मँहगे रंग
और इस तरह कोई नहीं बाँट पाता प्रेम
सब रख लेते हैं बढ़िया रंग अपने पास
और लगा देते हैं घटिया और सस्ते रंग

काश! कि हम कर सकते मिलावट
हर रंग में मिला सकते प्रेम का रंग
और ख़त्म कर सकते नफ़रत, घृणा
साज़िशों और तकलीफ़ों को।

# बादल से बात

कितना कहा था तुमसे गर्मी के मौसम में
कि बैचेन हूँ मैं, अब तो बरस जाओ
कैसे चमक उठती थीं मेरी आँखें
ज़रा भी देख लेती थी छाया हुआ तुमको

अब सर्दियों की रातों में बरसो
जितना चाहे बरसो, जी भर के बरसो
मैं कमरे का दरवाज़ा लगाके, रजाई ओढ़कर बैठी हूँ

वक़्त-बेवक़्त आने वाली चीज़ों की कोई क़द्र नहीं होती
अब के साल महबूब लौटकर आएगा
तो उससे भी यही कहूँगी।

## काश!

काश! कि तुम सुन पाते
मेरे लबों की ख़ामोशियाँ
मेरी साँसों की अँगड़ाइयाँ
मेरी हर अधूरी बात के आगे की सच्चाइयाँ

काश! कि तुम देख पाते
तुम्हारे साथ चलती मेरी परछाइयाँ
तुम्हारे प्रति मेरे विश्वास की गहराइयाँ
रातों को जागती मेरी बेचैनियाँ, बेताबियाँ

काश! कि तुम समझ पाते
तुम्हारे साथ होके भी मेरी तन्हाइयाँ
तुमसे छिपती-छिपाती मेरी उदासियाँ
मेरे हालात, मेरी मजबूरियाँ, ज़िम्मेदारियाँ, परेशानियाँ

काश! कि तुम भर पाते
मेरे अतीत के ज़ख़्मों की निशानियाँ
नज़दीकियों में भी पनपती ये दूरियाँ
मेरा अधूरापन, मेरा ख़ालीपन, मेरी कमियाँ, मेरी बारीकियाँ।

## अंतरा बेबी

हाँ साब, उसकी हँसी फूलों जैसी थी
उसी की गुड़िया जैसी उसकी अदाएँ
उतनी ही भोली जितनी वो बचपन में रही होगी

हमारा स्माइलिंग फेस थी वो साब
खुदा की नेमत थी उसकी ज़िंदगी
सिर्फ़ ख़ुशियाँ, प्रेम और रंग
उसके चेहरे का आईना इतना साफ़ कि
ख़ुशियों की एक-एक बारीक परत देख लो

पर जाने क्यों उसने रखा ही नहीं
कभी अपना मन उस आईने के सामने
हमने तो जितना जाना उसे ‘मासूम’ ही जाना
हाँ पर बाद के दिनों में शायद कोई था
जिसके सामने नंगा किया था उसने अपना मन
एक-एक करके खोली थीं सब अनदेखी परतें
बिना शर्म/बिना लाज/बिना हया के
कहती थी राधा ताई प्रेम में पर्दा कैसा
जिसने जिस्म के भीतर से रूह में झाँक लिया
उसके सामने मन रखने में कैसी शरम

फिर एक दिन जाने किस बात पर
उन दोनों में लंबी बहस हुई

जिसके सामने उसने अपनी रूह उतारी
उसने उसे सबके सामने खोटा बता दिया
बस साब इससे बाद वो नहीं आई वापिस
और चली गई अपने आँसू समेटकर
उसने जिसके सामने उघाड़ा ख़ुद को
वहीं उसकी चादर ही ले गया
साब अंतरा बेबी मिल जाएँगी न
बग़ल वाली मेमसाब ने बताया कि वो लापता हैं।

# मैली पीठ

तुम जिसे मेरे जिस्म की चमक से बुनते रहे
वो चादर मैली निकली
तुम ढँकना चाहते थे उससे अपने दुःख
अपने एकांत को उसमें छिपाकर
तुम ज़माने को दिखाने के लिए
एक दिलकश मोह रचना चाहते थे
ओ जाना! इस इश्क़ की आड़ में
तुम्हें पाक-साफ़ देह की कामना थी
इसलिए तुमसे नहीं स्वीकारी गई मेरी मैली पीठ।

## हादसा

उस हादसे के वक़्त सन्नाटा था सड़कों पे
जैसे अफ़ीम के नशे में पड़ा हो कोई बेपरवाह
चाकू से बस तीन इंच की दूरी पे हो गर्दन
बर्फ़-सा हथेली पे पिघल रहा हो
उम्र भर का हासिल
क़िस्मत वेश्या बनकर सड़क पर उतर आई हो
आदमख़ोर ने देह नोंचकर निकाला
माँस का एक टुकड़ा
भिखारी के कटोरे में डाल दी गई हो
बारूद भरकर ब्रेड
साँप के फन ने ज़हरीले कर दिए हों
हवा और पानी
लफ़्ज़ फूटते ही जीभ पे चुभने लगी हो सुई
आँखों से रिसकर निकल रहा हो
पिघलता सीसा
गर्म रेत पर नंगे पाँव दौड़ रही हो
एक छोटी बच्ची
कपड़े उतार कर ज़िंदगी कर रही हो तमाशा
कालकोठरी में बंद कर दिया हो
आख़िरी सितारा
कहानी के पन्नों पे गिर गया हो
स्याही का धब्बा
शैतान ने वशीभूत कर लिया हो महबूबा को
सारा शहर जल चुका हो दहशत की आग में

उस रात एक ‘मासूम’ ख़्याल टूटा था।

## प्रेम का दाँव

मैं चीखती हूँ, चिल्लाती हूँ, छटपटाती हूँ
तुम्हारे कानों में स्वर लहरियाँ गूँज रही हैं
जिनसे टकराकर लौट आते हैं मेरे शब्द
तुम्हें नहीं सुनाई देती मेरी तड़प, छटपटाहट

मैं पागल-सी हाँफती-फिरती हूँ तुम्हें तलाशते
ख़ाली, उदास, सुनसान, पेंचदार सड़कों पर
पत्थर से टकराती हूँ, लहूलुहान हो जाता है
तुम्हारे जाने के बाद बढ़ चुका
पैर के अँगूठे का नाख़ून

मैं पहुँचती हूँ रेगिस्तान में, उखड़ते-उधड़ते
रोशनी और पानी का भ्रम लिए मिलते हैं बहरूपिये
तुम्हारा नाम गले तक आकर फाँस की तरह चुभता है
ख़ाली बोतल-सा लुढ़कता है
तलवों के नीचे इंतज़ार

सब तरफ़ अफ़सोस का गहरा रसायन बिखरा पड़ा है
बबूल के सूखे पत्तों-सी टूटकर चरमरा रही हैं साँसें
नसों में लहू के साथ बह रहे हैं
हताशा और ख़ालीपन
कमरे की दीवारों पे लिखा है
कि मैं प्रेम का दाँव हार चुकी हूँ।

# पुरानी चीज़ें

लालच के चूहे धीरे-धीरे कुतरते जाते हैं
ईमानदारी की चादर फटती जाती है
और हम सोये होते हैं अपने ही खर्राटों के शोर में
गठरी में बँधे मुड़े-टुड़े फटे कपड़ों की तरह
पुरानी इच्छाओं को भी हमें पटकना होता है एक दिन
झूठ है कि नयी चीज़ें नहीं लेतीं पुरानी की जगह
ज़िंदगी की चाबी में लगा प्रेम का गुच्छा अगर टूट भी जाए
तो हमें खोज लेना चाहिए कोई नया गुच्छा
चाबी को गुमने न देने के लिए।

# चक्रवात

बर्फ़ की सिल्ली से बहते पानी की तरह
ज़िंदगी से रिस-रिस कर बहते उम्र के साल
और उसका अलग होना दहकती हुई अग्नि

काश! कि हम बदल सकते तापमान
बना सकते अपने चारों ओर एक ठंडा प्रदेश
और जमे रह सकते किसी जोख़िम भरे
आकस्मिक चक्रवात के आने तक

यूँ घुल-घुल के पिघलना अधिक कष्टप्रद है।

# झुर्रियों के निशान

चलो आज के दौर में नकली ही हो जाएँ
तुम ही कहो कि कौन देखता है
उजले चेहरे के आगे मैले पैर

वह बनकर रहना चाहता था मेरे भीतर
किसी बेहद सुरीले संगीत की तरह
पर मुझे कभी नहीं रही सुरों की कोई समझ

क़िस्मत कुछ नहीं बस इतनी-सी बात है
कि कुछ लोग कोसते हैं
बारिश के अँधेरे दिनों में सीली हुई माचिस को
और कुछ की दिन-रात की फ़िक्रें होती हैं
बस चेहरे पे आने वाले झुर्रियों के निशान।

# अमृता और इमरोज़

हम सब बन जाना चाहती हैं जूलियट
कि कच्ची उम्र में ही मिल जाय हमें रोमियो
और फिर बेफ़िक्र होकर अपने सारे लम्हे
हम गुज़ार सकें रोमियो की बाँहों में
इस तरह भटक जाते हैं हम पहली बार
और फिर भटकते ही रहते हैं प्रेम की तलाश में

दरअसल, हमें सोचना चाहिए
अमृता होने के बारे में
कि उम्र के आख़िरी मोड़ से पहले
इमरोज़ को तो आना ही है।

# सबसे बड़ा सुख

वे लोग जो अपने महबूब के पास होकर कहते हैं
कि उसकी बाँहों में होना ही सबसे बड़ा सुख है
उन्हें तकलीफ़ के समय में नहीं झगड़ना चाहिए
अपने महबूब से कभी भी इस बात पर
कि तुम न होते तो सब ठीक होता
उन्हें तो स्वीकार कर लेना चाहिए
अपने हिस्से में आये सभी दुखों को
सबसे बड़ा सुख पाकर मामूली दुखों के लिए क्या रोना
या फिर वे मान लें कि महबूब की बाँहें
बस पल भर की ही राहत हैं।

# मेरी तस्वीर

ये जो मेरी तस्वीर बनाई है तुमने
कोई हँसता मासूम बच्चा है
नन्ही आशाएँ बटोरती ज़हीन लड़की है
या तुमने अपनी नज़रों से तराशकर
मुझे यूँ ख़ूबसूरत कर दिया

ये जो मेरे चेहरे को रंगा है तुमने
आसमान में बिखरी दूधिया चाँदनी है
फूलों पे पड़ी शबनमी ओस है
या तुम्हारी मोहब्बत का नूर
चमक रहा है रंग बनकर

ये जो भीनी-भीनी ख़ुशबू डाली है
कलियों से इत्र निकालकर लाए हो
चंदन के दरख़्तों में उम्र गुज़ारी है
या ख़ुशबू है तुम्हारी देह से
मेरी देह के आलिंगन की

ये जो मेरे माथे पे लकीरें खींची है तुमने
इतिहास के सब पन्ने उकेरे हैं
जीवन की संजीदगी है, गंभीरता है
या चिंतन है हमारी दूरी की तड़प
और अधूरेपन का

बस इन झुकी हुई आँखों की अदा
समझ न आई
ये नज़रों की शर्मोहया है

कोई राज़ गहरा छिपाया है
या शर्मिंदगी है तुमसे
बेवफ़ाई की ख़ता की।

# नीम का पेड़

आज शाम मैं छत पर टहल रही थी
सर्द हवाओं में गीला हो रहा था मौसम

बस एक नीम का पेड़ गुमशुम/ख़ामोश/निस्तब्ध
न उसकी पत्तियों में कोई सरसराहट
न उसकी शाखाओं में कोई चेतना
यूँ हुआ होगा, शायद नहीं पहुँचा होगा
उस तक हवा का एक भी झोंका
मैंने पलकों को आँखों के बल टिकाकर
कुछ देर उसे एकटक देखा और जाना
कि कोई और वजह है इस ख़ामोशी की
इस शोर में भी खड़े सन्नाटे की

तभी वो अपनी चुप्पी तोड़कर
हवाओं का साथी बनकर लहलहाने लगा
शायद पहुँच गया था उस तक हवा का कोई झोंका
या उसे डर कि न पढ़ लूँ मैं उसकी उदासी
मैं सुन न पाऊँ उसके सन्नाटों की गूँज
इसलिए उसने छिपा ली अपनी ख़ामोशी
पत्तियों की सरसराहट में

वैसे ही जैसे मैं ओढ़ लेती हूँ
नक़ाब मुस्कुराहटों के और फैला लेती हूँ

अपने होंठों के दोनों कोने कि कोई जानने न पाए
मलाल दिल का/हाल दिल का

आज मैंने दर्पण नहीं देखा
वह नीम का पेड़ मुझे मुझ-सा लगा।

# विद्रोही गीत

कितने ही जन्मों से मैं हर सुबह कोशिश करती हूँ
बासी थूक से
अपनी पीठ के सफ़ेद दाग़ों को मिटाने की
मुझे प्रायश्चित का कोई दूसरा तरीक़ा नहीं मालूम

यूकेलिप्टस की तरह कुछ नाम
सुनकर ही अच्छे लग जाते हैं
मैंने वर्षों पहले सुनी थी
कि होती है कोई 'प्रेम' जैसी चीज़ भी

उसने पूछा कि तुम्हें आता है क्या
ज़हर का प्याला पीने का हुनर
मैंने उसे दिखाई
अपनी छाती पर उगी जहरीली झाड़ियाँ
अपनी पीठ पर रेंगते जहरीले साँप, केंचुए, बिच्छू
उस दिन उसने अपनी उँगलियाँ फेरीं थीं मेरी छाती पर
सारी झाड़ियाँ मख़मल की गद्दी में तब्दील हो गई थीं
सारे साँप-बिच्छू सुंदर तितलियों में बदल गए थे

फिर एक रात मैंने समूचे ब्रह्मांड को
अपने सिर पर उठाया था
तभी मुझे आई एक ज़ोरदार हिचकी
मैं दौड़कर भागी उसके पास रात के अंतिम पहर में

लेकिन वह चादर ताने गहरी नींद में सोया हुआ था
उस रात मैंने जाना कि
हिचकियों का आना मात्र शारीरिक प्रक्रिया है
औरत का जीवन कुछ और नहीं बस
किसी पिंजरे में क़ैद बुलबुल के विद्रोही गीतों जैसा है

ऐ चाँद! तुम ही मान लो गुरुत्वाकर्षण का नियम
और चले आओ पृथ्वी पर
आकाश को त्यागकर हमेशा के लिए
कि तुम तक पहुँचने के लिए
मनुष्य तोड़ रहा है प्रकृति के नियम
इसी तरह एक बंजारन ने तोड़े सब नियम संसार के
अपने महबूब के पास पहुँचने के लिए
लेकिन लोगों ने इसे इस सदी का
सबसे बड़ा पाप घोषित किया

नयेपन का शंखनाद करते
समय-समय पर झलकते हैं अश्रु
दुःख इस प्रकृति का सबसे विस्मयकारी तिलिस्म है

जाओ और जाकर छिपकली के पैरों में घुँघरू बाँध आओ
मुझे नहीं पसंद अब किसी का इस तरह चुपचाप चले आना।

# आईना

कुछ ख़ूबसूरत लड़कियाँ अपने बिस्तर के
ठीक सामने रखती हैं आईना
और अपनी हर अदा पे मरती रहती हैं ख़ुद ही

कुछ कम ख़ूबसूरत लड़कियों के कमरे के
एक कोने में लगा प्रतीक्षा करता रहता है आईना
लड़की के सजने-सँवरने की

और कुछ लड़कियाँ आईना झाँकती हैं
बाहर जाने से बस ठीक पहले के वक़्त में

लेकिन हर हाल में आईना
लड़कियों के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है

ये सभी तरह की लड़कियाँ एक दिन
अपने प्रेमी की आँखों में देख लेती हैं अपना चेहरा
और फिर उस दिन के बाद से आईना हो जाता है
कमरे में रखे किसी ग़ैर-ज़रूरी सामान की तरह
प्रेम सबसे ज़रूरी चीज़ों को भी बेकार बना देता है।

# सोलह सोमवार का व्रत

कभी-कभी मैं सोचती हूँ
कि सिलाई-कढ़ाई करती हुई
टीवी सीरियल से चिपकी हुई
और सोलह सोमवार का व्रत रखने वाली
लड़कियाँ भी होती होंगी क्या
मेरी तरह चुप्प, बेबस और मूर्ख

मैं जो घड़ी-घड़ी करती रहती हूँ
अपने ब्लॉग पर अपडेट
कुढ़ती रहती हूँ आज़ादी की कविताएँ लिखने में
और पढ़ती रहती हूँ अमृता प्रीतम की कहानियाँ
कभी-कभी सोचती हूँ
मुझे छोड़ देना चाहिए सोचना
ये बेवजह की बातें और भ्रम
जब मुझसे नहीं छोड़ी जाती अपनी मूर्खता
नहीं तोड़ी जाती अपनी चुप्पी और बेबसी
तो फिर आज़ादी की कविताएँ
लिखने और पढ़ने के बजाय
मुझे सीख लेना चाहिए सिलाई और बुनाई
और रख लेना चाहिए आज़ादी को क़ैद करने वाले
किसी अच्छे लड़के के लिए सोलह सोमवार का व्रत।

# ख़ास चीज़ें

पहली मोहब्बत की सबसे ख़ास बात की तरह ही
ख़ास होती है हिस्से में आई पहली तन्हाई
मगर हम ख़ुश हो जाते हैं उसे निष्कासित करके
और जीने लगते हैं अपना ख़ुशियों वाला भाग
लेकिन फिर तन्हाई पसर जाती है हमारे कमरे में
किसी बिल्कुल आम चीज़ की तरह
ख़ास चीज़ों को उनका ख़ारिज किया जाना पसंद नहीं।

## अपशकुन

मैं काट रही हूँ तुम्हारी यादों को
पैनी कैंची की धार के बीच रखकर
क्या हो सकता है अब ज़िंदगी में
इससे भी बड़ा कोई अपशकुन

आह! व्यर्थ सुना है मैंने कि
ख़ाली कैंची के चलाने पर
सबसे बड़ा अपशकुन होता है।

## हमारी मोहब्बत

एक कमरे के मकान में
रहने वाले लोगों जैसी थी हमारी मोहब्बत
हर रोज़ बिखरने वाली चीज़ों की तरह
मैं रोज़ बिखरती थी
वो रोज़ सँवारता था
कहता था फिर बिखर जाने के डर से
हम घर में चीज़ों को समेटना तो नहीं छोड़ देते
मैंने पूछा आख़िर कब तक
संभालोगे मुझे इस तरह
और वह हर रोज़ मुस्कुराकर कह देता था, बस आज और।

# अधूरी-सी शाम

आज मेरी छत पर टहल रही थी
वो अधूरी-सी शाम

जब मेरे होंठों में कंपन-सा होने लगा था
तुम्हारे होंठों के स्पर्श से
और खारा हो चला था
सीने में उमड़ता प्यार का समंदर
हसरतें पककर टपक रही थीं
तुम्हारे माथे से टपकती पसीने की बूँदों में
और भी मुलायम हो चला था
तुम्हारे मख़मली बदन से लिपटकर
मेरा ये जिस्म

तुम्हारे चेहरे कि वो दूधिया चाँदनी
जिसने चाँद को भी चमकीला कर दिया था
देखो चाँद आज भी चमक रहा है
उस चाँदनी से
और वो छत से नज़र आता टावर
जिसकी ओट में मैं शरमा के
सिमट रही थी
जब नज़रों से ही चूम लिया था
तुमने मेरे हर अंग को
तभी गाने लगी थी मेरी पायल प्रेमराग
कि आज शाम भी उसने वही धुन छेड़ी है

और तभी मेरी रूह पे पड़े थे
छींटे तुम्हारे अहसासों के
मैंने अब तक नहीं भिगोया अपनी रूह को
कहीं धुल न जाएँ वो छींटे

आज शाम जब मैं छत पर थी
तो टहल रही थी वही शाम
और फिर उसका अधूरापन नोंच ले गयी
ज़हरीले नाख़ूनों वाली काली रात
और मैं अँधेरे में यहाँ से वहाँ ढूँढ़ रही हूँ
उस शाम को भी और तुम्हें भी।

# नारंगी होंठ

कभी इंतज़ार के मौसम में
झड़ती उम्मीद की शाख़ें
कभी बेख़्याली की रातों में डूबती
खिलखिलाती नज़्मों की शामें

कभी टूटते बदन में
मेरी सिमटती अँगड़ाई
कभी तुम्हारे तसव्वुर को तरसती
बची हुई उम्र की तन्हाई

दुनिया नहीं नापती सिक्कों की गोलाई
इश्क़ के सिक्के की चकाचौंध काफ़ी है
एक पूरी उम्र धुँधली करने के लिए

पहाड़ के शीर्ष से ही नज़र आती है
इस शहर की असली ख़ूबसूरती
कि कुछ चाहतों का बोध होता है
बस उनमें समाहित होकर

बहुत आसान है ख़ुदा बनकर किसी को
अपने आगे नतमस्तक कर बिछा लेना
पर तुमसे नहीं हुआ
चरवाहा बनकर मेरी फ़िज़ूल इच्छाओं को हाँकना

हकीम बनकर मेरे स्थाई रोग का इलाज करना
कुम्हार की तरह मेरे बिगड़ैल सपनों को आकार देना

कभी तुम्हारे लिए जो बचाया था उम्र की बर्फ़ का गोला
उसके पिघलने का दु:ख कैसा
मुझे नहीं पसंद उदासी के रंगों से बनी कोई रेसिपी
मुझे तो गोला खाने के बाद के तुम्हारे वो नारंगी होंठ पसंद हैं
इसलिए मैं अब अपनी ज़िंदगी गुज़ार रही हूँ
डूबते नारंगी सूरज की उदासी भरी शामों में।

# मृत्यु

**(1)**

क्या तुम सुन पाओगे
मेरी मौत की ख़बर उसी तरह
जिस तरह मैंने सुनी ये ख़बर
कि अब तुम नहीं हो मेरी दुनिया में

हाँ, तुमको भी होगी
यही बेचैनी और हलचल
क्योंकि सच तो यही है कि

किसी के दुनिया में आकर चले जाने से
बड़ा दुःख और कुछ नहीं होता।

**(2)**

मेरे लिए तुम्हारे मौत की ख़बर ऐसे ही है
जैसे पृथ्वी का किसी धुरी पर अटक जाना

और बाद इसके इस वृहद
आकाशगंगा को निहारती
मैं सिर्फ़ एक सत्य जान पाई हूँ कि

कभी छोड़ा ही नहीं जाता जिंदगी का मोह
और कभी छूटता ही नहीं प्रेम का मोह।

**(3)**

दरअसल, तुम्हारी मौत की ख़बर सुनकर
मेरा यह दुःख तुम्हारे न होने से भी ज़्यादा
उस दुःखद सत्य से रूबरू होना है
कि मृत्यु ही जीवन का अंतिम सच है
और मैं व्यर्थ बटोर रही हूँ दोनों हाथों से
अपने अंत तक होने के सब प्रयत्न

अचानक ही तुम गला फाड़कर
चिल्लाते हो मेरे कानों में
कि दुनिया नश्वर है और कुछ नहीं टिकता
कितना भी मज़बूत महल बना लेने से

मैं दोनों हाथों से बंद कर लेती हूँ अपने कान
और मैं इस वक़्त सिर्फ़ तुम्हारे
न होने के दुःख से गुज़रना चाहती हूँ।

**(4)**

सब मिथ्या है, छलावा है
अस्तित्वहीन है, नश्वर है

तुम्हारा प्रेम, तुम्हारा दुख
तुम्हारा होना, तुम्हारा जाना

ये तुम्हारी मौत की ख़बर क्यों अटल है?

# संदूक

मेरे पास एक पुराना संदूक है
काला, जंग लगा और बदसूरत
और उसमें है एक बड़ा भारी ताला

हो सकता है संदूक में रखी हों
दादी की चाँदी की तोड़ियाँ
या फिर उनके पुराने फटे
कपड़े और सिक्कों का बटुआ

लेकिन दोनों ही स्थिति में
संदूक का ड्राइंग रूम में रखा जाना ठीक नहीं
इसलिए मैंने उसे पटक दिया है
घर के पिछले हिस्से में बने आड़े-तिरछे स्टोर रूम में

आज जब इस पर नज़र पड़ी तो
अपनी उत्सुकता ख़त्म करने के लिए
मैंने मिलाईं इसमें ढेरों चाबियाँ
लेकिन ज़ंग लगे ताले
इतनी आसानी से कहाँ खुलते हैं
ये संदूक भी किसी पुराने
छोड़े गए महबूब की तरह है
दिल के किसी ख़ाली कोने में
अलग-थलग पड़ा रहता है

एक भेद लिए
कि वो जो प्रेम के इतने साल साथ गुज़ारे
धोखा था, आदत थी या वाक़ई प्रेम था
और कोई चाबी नहीं मिलती
जो इस सवाल के संदूक को खोल पाए

इस बार मैंने बिना भेद जाने
संदूक को वापिस रख दिया है
लेकिन अबकी बार अगर ये नहीं खुला
तो इसे स्टोर रूम से ही हटा दूँगी।

# भीख

कटोरे में रखी भीख से ज़्यादा
और कुछ नहीं होता प्रेम

पूरा कटोरा भर जाने के बाद भी
भिक्षुक को रहती है तलाश
और ज़्यादा प्रेम के सिक्कों की

इस तरह अपने हिस्से का
पूरा प्रेम पाने के बाद भी
हममें से कोई भिक्षुक नहीं हो पाता संतुष्ट।

## चॉइस

प्रेम नहीं आता अपने साथ
चुनाव करने का विकल्प लेकर

कि रिश्ते को आरी से
काटने के कई साल बाद भी
अगर महबूब लौटकर आए
तो उसे माफ़ किया जाए या नहीं

उसके हर गुनाह के लिए
तुम्हारे पास होती है क्षमा
क्योंकि तुमने उससे प्रेम किया है
और प्रेम में चॉइस नहीं होती।

# इंतज़ार

मेरे लिए आसान था
कह देना कि कितनी देर कर दी तुमने आने में
मैं कबसे इंतज़ार कर रहा हूँ

पर तुम्हारे लिए आसान नहीं था
अपनी चौखट लाँघकर मुझसे मिलने आना
जाने कितने धर्मप्रहरी खड़े होंगे
तुम्हारी अस्मिता पे फब्तियाँ कसने
गली में घूम रहे होंगे कितने कुत्ते
आवारा साँड़ और असामाजिक तत्व

किसी की भी नज़र में आती तो
लांछनों के बाण से तुम्हारे
वक्ष को चीर कर रख देते
और तुम्हारे पावन होने का प्रमाण
मेंढक बनकर फुदकता रहता
एक नाली से दूरी नाली में

ये बात और है कि किसी से कहा नहीं तुमने
वरना तुम्हें सुनाए जाते
कितने ही उसूल, आदर्शवादिता और
मर्यादा के उदाहरण

पर नहीं बताने के बावजूद भी तो रोका होगा
माँ के संस्कारों ने प्रहरी बनकर
भाई की फटकार ने भय बनकर
और सही-ग़लत का तराज़ू थामे
तुम्हारे चरित्र के नीति-पारखी ने

फिर भी तुम आई
मर्यादाओं की दहलीज़ लाँघकर
कलंक और निंदा के लांछनों को
अपने आँचल में छिपाकर
यहाँ सभ्यता के हर ढोंगी को इंतज़ार था
तुम्हारे जरा आँचल सरकने का
और शर्मिंदगी के क्रॉस से लटकाकर
तुम्हारी पवित्रता पे कोढ़े बरसाने का

तुम्हें यूँ तो सौ क़दम ही तय करना था
पर थे सौ अवरोध/सौ बाधाएँ/सौ दीवारें
सौ रीति-रिवाज/सौ परंपराएँ
कितना यक़ीन रहा होगा तुम्हें मुझ पर

तुमने बड़ी सादगी से माफ़ी माँगते कहा
कि मेरी नाराज़गी जायज़ है

पर सच कहूँ तो अगर तुम न भी आती
तो भी जायज़ था मेरा इंतज़ार करना
इससे अगले कई जन्मों तक भी
क्योंकि तुम्हारे लिए सचमुच आसान नहीं था
वक़्त की पाबंदी में इन सौ क़दमों में

अपनी चौखट लाँघकर एक मुझसे मिलने आना।

# प्राथमिकताएँ

तुमने मुझे अपनी प्राथमिकताओं के
निम्नतम स्तर पर रखा है
यहाँ से मैं देख रही हूँ एक-एक कर
तुम्हारा मेरी ओर बढ़ता क़दम
तुम इमरोज़ नहीं कि कमरे के तीन चक्कर में ही
ख़त्म हो जाए तुम्हारी दुनिया
और तुम दौड़कर चले आओ मेरे पास

चलो ठीक है...
तुम आराम से सब काम निपटा के आना
मेरे पास इंतज़ार की एक पूरी उम्र पड़ी है।

# आवाज़ के अवशेष

उनका आदेश था कि किसी पहाड़ तक की
खुदाई में भी न निकले मेरी आवाज़ के अवशेष
इसलिए मैंने खुद को कर दिया स्वाहा और
आला दर्जे के खंजर से काट ली अपनी ज़ुबान
ढँक लिया ख़ुद को पहनकर चुप्पी का काला बुरखा

ये बात और थी कि उन्हें मालूम था
किसी मंगल, जूपिटर, एवरेस्ट या
एफिल टावर के पीक पॉइंट पर जाकर
लाउडस्पीकर से चिल्लाना मेरा मक़सद नहीं था
मैं तो अपने कमरे की दीवारों से सच कह रही थी
जिसमें न तो कोई खिड़की थी न कोई सूराख़
फिर भी उनका हुक़्म था कि
नहीं सुनाई देना चाहिए
मेरी जिह्वा से किसी तरह का
कोई अतिशय कोई अवसाद कोई संबोधन
इसलिए मैंने सीने में रख ली है
मुठ्ठी में भींच ली है
दाँतों में पीस ली है अब अपनी हर चीख।

# विस्फोट

जलने पर कितना भी ख़ूबसूरत रहा हो
पर दिवाली की बारूद की तरह बुझना ही था
इस बेवजह के प्रेम को

तुमने सोचा कि आराम से बुझेगी ये चिंगारी
पर तुम भूल गए कि तुमने बारूद चुनी थी
खिड़कियों में टँगी रोशनी की झालर नहीं
कि तुम्हारे बिस्तर के पास लगे
ऑन-ऑफ़ के स्विच से तुम
अपनी इच्छा से चुन सको इसका जलना-बुझना

बारूद के जलते वक़्त ही तय हो गया था इस विस्फोट का होना।

# वारिस

प्रेम नहीं लिखता अपनी वसीयत में
ख़ुशी के सिक्कों की तिज़ोरी का पता
ये चालाक आदमी की तरह लिखता है
हैरान करने वाले सुराग और संकेत

और जब हम करते हैं प्रेम
बन जाते हैं इस संपत्ति के वारिस
हम सारे संकेत समझकर
खोजने निकल पड़ते हैं मुद्राएँ
पर हम हो जाते हैं मतिभ्रम
और भटकते हुए पहुँच जाते हैं
दुखों की काली लंबी सुरंग में
जहाँ हमें दिखाई देता है सिर्फ़
तकलीफ़ों का गूढ़ अंधकार
लाख प्रयासों के बावजूद
हम नहीं ढूँढ़ पाते ख़ज़ाना
नहीं मुक्त हो पाते इन कष्टों से
और बन जाते हैं दुखों के वारिस।

# नीला ज़हर

लम्हा-लम्हा बिखरा पड़ा है
एक रात है वर्षों से जगी हुई
आधे तन पे कंबल लपेटे
एक बात है होंठों में दबी हुई

तू सागर-सा मुझको समाता जा
मैं तुम बन तुममें मिलती जाऊँ
तू बनके सुबह ढूँढ़े मुझको
मैं रात बन-बन छिपती जाऊँ

कुछ कहने लगी आँखों की उदासी
ख़्वाबों के समंदर जमे हुए से
इक बार तूने शिद्दत से था चाहा
उस वक़्त के मंजर थामे हुए से

मेरे होंठों पे अपने होंठों को रखकर
आजा मुझे नीला ज़हर पिला दे
चुभन बाक़ी है राहतों में अब भी
सीने से लगाके हर मलाल मिटा दे।

# आदमी का प्रेम

उसने औरत की कलाइयाँ चूमी
शिद्दत से उसकी गर्दन को चूमा
उसकी गर्दन से नाभि तक जाती
छाती के बीच की रेखा को भी चूमा
उसके गाल और कान के बीच रखे
जिस्म के सबसे हसीन गहरे भूरे तिल को चूमा
उसने तमाम रातें तमाम औरतों को चूमा
उसे भी चूम लेना चाहता था वह
उतनी ही बेशर्मी बेफ़िक्री से
उसके जिस्म के हर टुकड़े को
पर वह नहीं चूम सका उसकी हथेली को भी
उसने उस रात सिर्फ़ उसका माथा चूमा
उसे मोहब्बत हो चली थी उससे
फिर उसने किसी रात किसी को नहीं चूमा
वह आदमी जो सिर्फ़ जानता था बदन को चूमना
दरअसल, कभी नहीं चूमा गया था उसका दिल।

# गुनाह

तुम अगर न भी आओ तो
ये चाँद ले आएगा तुम्हारी छत तक
मेरे जिस्म की महक
फिर भी मैं चाहती हूँ कि तुम आ जाओ
क्यों गुज़ारो आख़िर एक पूरी उम्र
केवल मेरे स्पर्श के गुनाह में

मैंने मिटा दिए हैं सारे निशान
अब तुम्हारे न आने का कोई भी निशान
इस समूचे ब्रह्मांड में तो नही
चादर की सलवटें अब नहीं बोलतीं
ये जनवरी की सर्द रात नहीं
मई की अंगारों वाली रात है
और मेरी भीगी ज़ुल्फ़ें नहीं बुझा सकतीं
जिस्म में उठती इस आग को

इसलिए तुम्हें आना ही होगा ये गुनाह करने
पहला और आख़िरी गुनाह तो सबको माफ़ होता है न!

## छलावा

रात नहीं कहती कि तुम जुगनू हो जाओ
दरअसल हम जलते जाते हैं
अपने ही भीतर के अँधेरे के साथ

शहतूत के तने में
नुकीली चोंच वाले कीड़े बनाते जाते हैं घर

पाप के निशान देह पर आकर मिट जाते हैं
पर पछतावे के दाग़ उगते हैं आत्मा पर
और नहीं जाते कितना भी खुरच लेने से

कोई छतरी पूरी बारिश नहीं सोख सकती
हम बस अपनी छतरी के साथ
ख़ुद गीले होने से बचे रहते हैं
अपनी अच्छाई के बारे में भी
हमें इसी तरह सोचना चाहिए

मैं छत पर बैठे सोचकर मुस्कुराता हूँ
वह आसमान के साथ कैसे खेलती थी खेल
अकेले छत पर ख़ामोश बैठे
बादलों पे बनाती जाती थी तमाम आकृतियाँ
प्रेमिकाएँ ईजाद करती हैं
ख़ालीपन को भरने के नए-नए उपकरण

सिगरेट सुलगाना बस एक आदत है
अच्छे या बुरे वक़्त का नतीजा नहीं
ख़ुशियों में भी मायूस रहना उस लड़की की आदत थी

ऊँचे पेड़ों को छलती हैं ऊँची इमारतें
उनसे ठंडी हवा छीनकर करती हैं
वे अपनी अमीरी का प्रदर्शन
विश्व की सबसे ऊँची इमारत सबसे बड़ा छलावा है

आसमान से जो टूटा है
तुम्हारी याद का चमकता सितारा
आज रात मैं उसे ज़मीन की गर्त में दफ़न करूँगा।

# संतुष्टि

मैं अरसे बाद भी चाहती हूँ कि तुम लौट आओ
और मैं चूम सकूँ तुम्हारे माथे पर
अपने पैरों के अँगूठों पर खड़े हो के
असल में एक उसी वक़्त मैंने महसूस किया था
ख़ुद को पूरी तरह से संतुष्ट।

# बहेलिया

हरे रंग की स्लेट पर चॉक से
लिखे जाने वाले टेढ़े अक्षरों की तरह
नहीं होता यह प्रेम कि जब चाहा
मिटाकर सुधारा जा सके

प्रेम आता है उस बहेलिये की तरह
जो कभी नहीं होता अपने शिकार के लिए उदार।

# संस्कार

भूत भगाने वाले मंत्र की तरह
मैंने ख़ूब दोहराया प्रेम प्रेम प्रेम
पर मैं कभी नहीं कर सकी सही उच्चारण
इसलिए प्रेम ने नहीं किया मुझे सुरक्षित

बाईस साल की लड़की जी रही होती है लड़कपन में
या कोई पत्नी या माँ बनकर भी
कौन कहता है उम्र के साथ ही आती है समझ

आओ बदल डालें शास्त्रों के लेख
कि अब इंसान को सोलह नहीं
सोलह सौ संस्कारों की ज़रूरत है।

## ज़ख़्म

तुमने एक सूखा पत्ता लिया
उसको रखा अपने जूते के नीचे

तुमने एक काँच की बोतल ली
उसे फेंका चौथी मंज़िल से नीचे

तुमने अपने ही घर की दीवार पर
ढेरों कीलें ठोंकीं, ढेरों सूराख़ किए

फिर तुम्हें ज़ख़्म देने की आदत-सी हो गई
अब तुमने मेरे दिल के साथ भी ऐसा किया।

# भरोसा

कबूतर के चोंच में दाना फँसाने पर
व्हिस्की में सोडा मिलाने पर
और रूई के फाहा को दबाने पर

जितने बचे रह जाते हैं दाना, सोड़ा और रूई
उतना ही शेष रह गया है तुम पर भरोसा

कौन कबूतर नहीं चाहता, सारा दाना चोंच में भर लेना
पर किसी कबूतर की नहीं होती इतनी लंबी चोंच।

# ईसा मसीह

कभी आकाश से कोई देव आए
और अपने बदन पे सह ले मेरे सारे दुःख
उसके साथ ही सूली पर टाँग दिए जाएँ
मेरे कष्ट मेरी कसक मेरे क्लेश

एक पूरी सदी के दुःख से लदे हुए
मेरे कंधों को इंतज़ार है
ईसा मसीह के दोबारा आगमन का।

# पहली मौत

मैंने सप्तऋषि तारामंडल के पास
जला दिया है तुम्हारे नाम वाला बल्ब
रोशनी खो रही थी अँधेरे के बंडलों में

एक बार मैंने तोड़ा था महबूब से किया वादा
वह मेरे जीवन की पहली मौत थी

डायरियों में लिखी होती हैं अक्सर अधूरी बातें
अधूरे चित्र, अधूरा प्रेम, अधूरे नाम
डायरी में बंद होती हैं
जाने कितनी ही अधूरी चीज़ों की मौतें

कुछ स्थाई नहीं है सब नष्ट हो जाता है
चूहे कुतर लेते हैं सहेजी हुई सूखी बासी रोटी भी

पृथ्वी अब आराम के दिन काटना चाहती है
वह नहीं लगाना चाहती सूर्य के चक्कर
मैं चाहती हूँ कि मेरी भी धमनियों में बहने लगे
ऑक्टोपस के ख़ून की तरह नीले रंग का ख़ून
पर कुछ चाहनाएँ ताउम्र सिर्फ़ बहती रहती हैं
ज़मीन के नीचे बहने वाली पानी के साथ
मैं चमकना चाहती हूँ तुम्हारे माथे पर
किसी सबसे चमकीले जुगनू की तरह

सूक्ष्म अमीबा ने देखा है
भारी उल्का पिंड बनने का सपना

नए-नए निष्कर्ष बदलते जाते हैं पुराने तथ्यों को
नया प्रेम पुराने को ग़लती बना देता है

मन के भीतर का अँधेरा करता है ईश्वर की आलोचना
मैं टुकड़ा-टुकड़ा सूरज की मुस्कान बटोरती हूँ
ईश्वर को नाराज़ न होने देने के लिए

रातें अँधेरी हुई जाती है अश्लीलता में
दिन जलते जाते हैं पश्चाताप की अग्नि में
मैं लालच करती हूँ ख़ाली पैकेट में बचे हुए घी का

भेड़िये क़ब्ज़ा कर लेते हैं मेरे स्वप्न पर
मैं जागती रहती हूँ बर्दाश्त की हद से ज़्यादा।

## द लास्ट लीफ़

तुम चाहो तो इस बार काट ही देना
धारदार ब्लेड से मेरी उँगलियाँ
धरती के कंठ के लावा में जला देना
मेरी कविता को अश्लील कहकर उसके शब्द

पर तुम देखना इस बार मैं बची रह जाऊँगी
ऑक्सीजन की तरह आकाश में
मेरे मवाद भरे शब्दों के फफोले
फूटते रहेंगे काग़ज़ के कोमल शरीर पर

तुमने भी तो अपनी दहकती इच्छाओं के लिए
मेरे शरीर को किया रेगिस्तान
मेरे वक्ष पे उगाई नागफनी
मेरे होंठों को कर दिया काला लोहा
कीचड़ में सना लावारिस पत्थर मानकर मुझे
तुम उछालते रहे अपनी लात से इधर-उधर
तुम्हारे पास थे टूटे काँच और नए-नुकीले औज़ार
मेरी योनि से बहती रही रक्त की धारें
और तुम अपनी वासना की लौ के धुएँ से
करते रहे 'ब्लैक होल' को और भी गहरा
मैं अपने लंबे नाख़ूनों से कुरेदती रही तुम्हारी पीठ
फिर भी मेरे ही बदन पर फूटे ज़ख़्मों के बीज
जाने कौन से भाप इंजन के शोर में
मिल गई मेरी फड़फड़ाती चीख

न आसमान के पास थी आँखें
न धरती की कोख थी फटने की अवस्था में
सब काले कौए, कुत्ते, चील, गिद्ध थे गहरी नींद में
मैं धँसती गई गिट्टी के ढेर में
और तुम्हारी चटख गुलाबी हँसी दहाड़ कर
करती रही मेरे सारे नक्षत्रों को अशुभ
किसी के कानों में नहीं सरसराई
मेरे रुदन वाली सिम्फनी

तुम चाहो तो मुझे मार दो गोली चौराहे पर
पर तुम देखना इस बार मैं बची रह जाऊँगी
तुम्हारे बावन साल की उम्र में उभरे
मेरे नाख़ूनों के दिए पीठ के दर्द में
और प्रायश्चित की अग्नि में जलकर तुम
किसी वृक्ष की भाँति झड़कर सूख जाओगे।

## समीकरण

मैं एक आरामदेह समीकरण ईजाद करती हूँ
एक तरफ़ मैंने
पृथ्वी के कोर से अंतिम छोर तक के सुख लिखे हैं
दूसरी तरफ लिखा है तुम्हारा नाम

लेकिन नामुमकिन है तमाम सुखों का पा लेना
फिर समीकरण के दोनों पक्षों को बराबर करने के लिए
तुम्हें पाना भी नामुमकिन कर लिया

वैसे समीकरण का ये हल अंत नहीं है
गणित में सब कुछ इमेजिनरी तो होता है।

# माचिस की तीली

एक माचिस की तीली पर्याप्त नहीं होती
कई सारे और बहुत सारे पन्ने जलाने के लिए
लेकिन एक तीली से जले एक पन्ने से
जलता है दूसरा पन्ना
तीसरा, चौथा और बाक़ी सब पन्ने
और फिर जल जाती है पूरी किताब

इसी तरह ग़लतफ़हमी की एक तीली से
जलता है प्रेम का एक हसीन दिन
और उस एक दिन से जलते हैं प्रेम के कई साल
फिर जल जाते है पूरी उम्र, पूरा रिश्ता

पर माचिस को उठाकर
घर से बाहर भी तो नहीं फेंका जा सकता
रोशनी भी तो इसी से होती है
कुछ ग़लतफ़हमियाँ ही तो हैं जो ज़िंदा रखे हैं मुझे
कि ये ख्वाब, ये तुम्हारा प्रेम
इन्हें दिल से निकाला नहीं जा सकता
पर आग से पन्नों को तो दरकिनार किया जा सकता है।

# सम्मोहन

मैं सड़क पर पड़े नींबू-मिर्च पर
आज भी पैर रखने से डरती हूँ
कि किसी के बस में होने से
बड़ी सज़ा कोई और नहीं

मुझे याद है कि मैं पिछले साल तक
किस तरह से तुम्हारे बस में थी।

# महबूब का वादा

हर सुबह नहीं होती सुहानी
तोड़ देती है कभी हसीं सपनों को भी

हर रात नहीं होती अँधेरी
कभी ले आती है पहलू में चाँदनी भी

महबूब ने भी तो कहा था
मेरे हर वादे पर यक़ीन मत करना।

# लम्हे

उदासी भरी एक उम्र और
सुकून में लिपटे कुछ लम्हे
उसने कॉफ़ी का एक सिप लिया और कहा कि
बिता सकोगी ये उम्र उदासी को भुगतते

और मैंने भी हँसकर उससे कह दिया
कि क्या देखा है तुमने कभी
लम्हों को उम्र पर भारी पड़ते हुए।

# उदासी की लकीर

तुम्हें पता है क्या कि
उदासी की लकीर कितनी लंबी है
क्या जाती है ये उम्र के अंत तक

न न, कोई और सज़ा अता हो मेरी जाँ
कल ही ज्योतिषि ने बताया कि
मेरी उम्र बहुत लंबी है।

# पाप और भय

तमाम चिंताओं के बाद भी
कोई नहीं भूल पाता मौत के बारे में
मृत्यु का भय झूलता रहता है
सबकी पेशानी पर
मृत्यु से ज्यादा
मनुष्य किसी और चीज़ से नहीं छला गया

हम सहेजते रहते हैं
क़ुदरत की हार्डड्राइव में अपनी ज़िंदगी का डेटा
और अकाल मृत्यु का वायरस
एक दिन कर देता है सब कुछ करप्ट
काश! ज़िंदगी का भी लिया जा सकता बैकअप

पैरों के दर्द भरे छालों से भी
ज़्यादा तकलीफ़ देते हैं चेहरे के काले धब्बे
और हम देख सकें आईने में ख़ुद को पाक साफ़
इसलिए हम ढँकते रहते हैं
अपने ही हाथों से अपने पाप।

# मेरी उम्र की लड़कियाँ

हाँ जाना तुमने ठीक कहा
मुझे नहीं लिखना चाहिए इतना बेबाक होकर
मेरी उम्र की लड़कियाँ नहीं सोचा करतीं
ऐसी वाहियात बातें

वे बस लिखा करती हैं
फूल, तितलियों और रूमानी मौसम वाली कविताएँ
या फिर अपने काल्पनिक प्रेमी के हसीन अहसास

लोग तो यो भी कहते हैं
मेरी उम्र की लड़कियों को
प्रेम करने की भी अनुमति नहीं है
तो क्या तुमसे प्रेम करना भी छोड़ दूँ?

## करवाचौथ का व्रत

औरत भागती फिरती है
अपनी नाभि में कस्तूरी लेकर
पत्थरों से रगड़ती है अपना बदन
पर नहीं छोड़ पाती महक
आदमी सरपट दौड़ता है पीछे
मन में इत्र का ख़्वाब लेकर

भले ही दुनिया के बचने की कोई आस न रहे
और साल के बाक़ी सब दिन अपनी मुट्ठी में
धारदार ब्लेड रखकर
वह ढूँढ़ती हो अपनी कलाई की नस
लेकिन सबसे ज्यादा जरूरी होता है
करवाचौथ का व्रत

औरतें जकड़ ली जाती हैं
बिना नाख़ूनों वाले हाथ से भी
लेकिन उनके लंबे नाख़ून भी नहीं छील पाते
आदमी की लालसाओं तक को
औरत की देह और आत्मा के होते रहते हैं टुकड़े
सूरज छिपा रहता है रात का बहाना करके।

# ख़राब लोग

हम एक ही मिट्टी से बनाए गए दो लोग
उपन्यासों में उघाड़े गए सच की तरह हमारी आत्माएँ
हम एक ही तरह के बिंदुओं से बनी दो अलग-अलग आकृति
अलग-अलग कैनवास पर एक ही रंग से बने चित्र

हम चीरते जाते हैं तानाशाही पेड़ों के तने
हम पर निशानेबाज़ी करते हैं पहरेदार
हमारे मुँह में भरी जाती है ज़हरीली तंबाकू
फिर भी हम सत्य की रट लगाए हलचल मचाते हैं
भरी दोपहर में हम अभिव्यक्ति की रोशनी लिए
अपने नंगे पैर जलाते हैं बाज़ारों में

लोग धुत हैं अफ़वाहों भरे अल्कोहल के नशे में
हमें नहीं आता त्याग के कीचड़ में अपनी जड़ें तलाशना
हम खंडित करते जाते हैं समाज की आदर्श प्रतिमाएँ
हमें पेड़ों पे लटकाया जाता है गोलियों से दागा जाता है
फिर भी हम जी उठते हैं पुनर्मिलन के लिए
आदमी से बेहतर हवाएँ जानती हैं कि प्रेम क्या है

अब जर्जर हुआ जा रहा है हमारा बदन बुढ़ापे में
हम लौटे हैं सिर दर्द और खोई हुई आवाज़ें लेकर
अब एक मछुयारे के काँटे में फँस जाना चाहते हैं हम दोनों
एक लैम्पपोस्ट के नीचे मिला देना चाहते हैं अपनी परछाइयाँ

हम समा जाना चाहते हैं सूर्यास्त के बाद पृथ्वी की छाती में
लेकिन इससे पहले क्या ख़त्म होगा ये कलियुग?
क्या आने वाली नस्लों में जन्म लेंगे हम जैसे ख़राब लोग
हमारी ये विरासत हम किसके नाम करें?

# सहेजी हुई बातें

कई बार हम बन रहे होते हैं बेहद समझदार
सुई में धागा पिरोते वक़्त केवल देखते हैं
उस छोटे से छेद को भी आँखें टिकाकर
और मटर छीलते वक़्त पूरे ध्यान से
अलग करते हैं किसी भी दाने में लगे कीड़े को
हालाँकि, दिल बेग़ैरत नहीं मान पाता कोई नियम
चाहे तो सूर्य को अर्घ्य देते समय भी
ले आता है महबूब का ख़्याल
फिर भी हमें हम लगे रहते हैं
अपनी ही नाकाम कोशिशों में

बर्फ़ को फ्रिज से निकालकर
आग देने की ज़रूरत नहीं
कुछ वक़्त यूँ ही रखो तो
अपने आप पिघल जाती है
इसीलिए प्रेम जैसी चीज़ों को
क़रीने से सहेजा जाना बहुत ज़रूरी है

सूरज तक पहुँचने की कोई सुरंग नहीं आसमान में
पर होती भी तो कौन अंतरिक्ष यात्री
जाना चाहता सबसे पहले
इसलिए सूरज तक रास्ता खोजने के बजाय
हमें पहले ढूँढ़ लेना चाहिए किसी हनुमान को
जो उस आग के गोले को मुँह में रख के

बता सके उसका स्वाद

क्या हो कि बदल दिया जाए
पूरब और पश्चिम को आपस में
तो क्या तुम कहने लगोगे पश्चिम को पूरब
या फिर बदल डालोगे दिशाओं से जुड़े सब तथ्य
एक ऐसा ही असमंजस जन्म ले लेता है
जब अनुभव को रिप्लेस कर देता है प्रेम

कौन पालता है कछुओं को इसलिए
कि उनसे प्रेम है
असल में सब भरे होते हैं
और अधिक पैसों के लालच से।

# निर्वात

कुछ औरतों के मन निर्वात की तरह होते हैं
सुन्न/रिक्त/उदास/बेआवाज़/
लोग चीखते हैं चिल्लाते हैं
पर सारी आवाज़ें होती हैं बेअसर
उनके ठहरने की सारी कोशिशें होती हैं बेकार
उन औरतों के मन पर जब होती है प्रेम की दस्तक
तो शून्य बन जाता है पॉजिटिव
और भरने लगती हैं सब ख़ाली जगहें भी
निर्वात दरअसल या तो प्रेम से पहले की अवस्था है
या प्रेम में टूट जाने के बाद की
प्रेम में कोई मन निर्वात नहीं होता।

# देह की कामना

काँच की शीशियों में
रंगीन गोलियों की तरह
भरा जाता है मेरा जिस्म
मैं छिपाती हूँ ख़ुद को
फटे हुए पर्दों के पीछे
देह की कामना उनके लिए
सबसे बड़ा रोमांच है

ट्रेन गुज़र जाने के बाद भी
बचा रह जाता है
इंजन का काला धुँआ
सब ख़त्म होने के बाद आज भी ताज़ा हैं
मेरी आत्मा पे खरोंच के निशान

तुम्हारी हवस का बुख़ार
मेरी गर्म देह पे नाचता है
मैं अपने माथे पर रखती हूँ
हर दिन ठंडे पानी की पट्टियाँ
कभी जो प्रेम का मदारी तुम लाए थे
वह अपनी डुगडुगी के साथ
किसी कोने में बेहोश पड़ा है
वासना का माँजा काटता जाता है
रिश्ते के हाथों की लकीरें
ज़िंदगी की पतंग टूटकर

झाड़ियों में उलझती रहती हैं

गीता के श्लोक ढँकते हैं मेरी नग्न देह
गौतम के कंठ में फूटता है मेरा रुदन
ईसा मसलते हैं अपनी मुट्ठियों में मेरे अश्रु
सुकरात हारकर पी लेते हैं मेरे लिए विष का प्याला
कोई नहीं मिटा पाता मेरे ऊपर जमी हुई काई
चाँद व्यस्त है अपनी ही कलाओं के खेल में
मैं मारी जाती हूँ कभी अपनी चुप्पी, कभी चीख में।

# छली हुई औरतें

औरत की हथेलियाँ ढँक सकती हैं अपने वक्षों को
पर पीठ पर बनाए गए कोढ़ों के निशान को नहीं
औरत की छाती से ज़्यादा छिली जाती है उसकी पीठ

औरत के शरीर में क्यों होते हैं इतने अनदेखे अनछुए रंग
कि हर आदमी कल्पना करना है औरत को बिना दुपट्टे के
जबकि आदमी की तरह ही माँस के टुकड़े और
कच्चे लहू से ज्यादा और कुछ नहीं औरत का शरीर

एक बुद्धिजीवी ने औरतों की आत्महत्या पर उठाई थी ये बात
कि औरत को आदमी नहीं उसकी ख़ुद की कमज़ोरी मारती है
और मैं मूर्ख नहीं समझा सकी उसे ये बात कि
साहब औरतें मारी नहीं जाती, औरतें छली जाती हैं।